ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-5* August- 2021
Anthology : The Research

वेद-कालीन आजीविका के संसाधन
Resources of Vedic Livelihood

Paper Submission: 14/08/2021, Date of Acceptance: 24/08/2021, Date of Publication: 25/08/2021

महेश कुमार कुमावत
सह आचार्य
संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
टोंक , राजस्थान, भारत

सारांश

वेद कालीन आजीविका के संसाधन लेख भारतीय संस्कृति के मूल ग्रंथ वेदों में चित्रित भारतीय संस्कृति के आर्थिक पक्ष को आधार बनाकर लिखा गया है। पाश्चात्य विद्वान् मैक्समूलर ने सम्पूर्ण वैदिक काल को तीन भागों में विभक्त किया है। 1 छंद काल, 2 मंत्र काल, 3 ब्राह्मण काल। उस समय का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि, पशुपालन, वाणिज्य, व्यापार, उद्योग धंधे आदि पर आश्रित था। कृषि संबंधी विभिन्न शब्दावली एवं क्रियाकलापों के आधार पर कहा जा सकता है कि उस समय कृषि ही आजीविका का प्रमुख साधन थी। वेदों में गाय, घोड़े, भेड, बकरी आदि के उल्लेख से स्पष्ट है कि उस समय पशुपालन आजीविका का दूसरा मुख्य साधन था। वैदिक काल में वाणिज्य व्यापार का भी महत्वपूर्ण स्थान था। गाय को वस्तु विनिमय प्रणाली के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। वस्त्र निर्माण, रथ निर्माण, आभूषण निर्माण एवं शस्त्र निर्माण उस समय के प्रमुख कार्यक्षेत्र थे। इस प्रकार वेद कालीन समाज का विविधता पूर्ण चित्रण प्राप्त होता है, जो आर्थिक रूप से धन संपन्न था।

The resource articles for the livelihood of the Vedas have been written on the basis of the economic aspect of Indian culture depicted in the Vedas, the original text of Indian culture. The Western scholar Max Müller has divided the entire Vedic period into three parts.1 Chhand Kaal, 2 Mantra Call, 3 Brahman Kaal. The economic life of that time was mainly dependent on agriculture, animal husbandry, commerce, trade, industry etc. On the basis of various terms and activities related to agriculture, it can be said that at that time agriculture was the main means of livelihood. It is clear from the mention of cows, horses, sheep, goats etc. in the Vedas that animal husbandry was the second main means of livelihood at that time.Commerce was also an important place of trade in the Vedic period. The cow was used as a barter system. Textile manufacturing, chariot making, jewelery making and weapon manufacturing were the main occupations of that time. In this way a diverse depiction of the Vedic society is obtained, which was financially rich.

मुख्य शब्दः वेद, आजीविका, संसाधन, कृषि, पशुपालन

Vedas, Livelihood, Resources, Agriculture, Animal Husbandry.

प्रस्तावना

ज्ञानार्थक विद् धातु से निष्पन्न वेद शब्द का अर्थ "ज्ञान" होता है। वेद परम् प्रमाण अर्थात् आगम या शब्द प्रमाण में उत्कृष्ट माने गए हैं। वेद ज्ञान के समस्त उपायों में श्रेष्ठतम है। साहित्य के रूप में संपूर्ण वेद वाङ्मय महत्वपूर्ण है। वैदिक साहित्य के रूप में ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद तथा सूत्र साहित्य का क्रमशः विकास हुआ। आर्य जाति की प्राचीनतम संस्कृति वेदों में ही मिलती है। संस्कृति के ही एक घटक आर्थिक पक्ष पर विभिन्न दृष्टांतों के माध्यम से यहां प्रकाश डाला गया है।

वेद भारतीय विद्या के मूल्यवान रत्न है। विद्वानों का मानना है कि ऋग्वेद न केवल भारत का बल्कि संपूर्ण विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति का मूल आधार वेदों को ही माना गया है । ऋग्वेद के अतिरिक्त यजुर्वेद , सामवेद और अथर्ववेद है। इनमें अथर्ववेद सबसे बाद का वेद है। वेदों की रचना काल के बारे में विद्वान एकमत नहीं है। इस विषय में सर्वमान्य तथ्य यह है कि वेद अपौरुषेय और अनादि है। जो अलौकिक ईश्वरीय ज्ञान ऋषियों ने अपनी अंतः प्रज्ञा द्वारा जाना उसे ही मंत्र रूप में निबद्ध किया गया है। अतः इनका समय निर्धारित करने जैसी बात अनावश्यक है।[1]

भारतीय संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता चार पुरुषार्थ-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष है। वैदिक

चिंतन में मनुष्य की व्यष्टिगत एवं समष्टिगत उन्नति के लिए इन चार पुरुषार्थों को अर्जित करना आवश्यक माना गया है। इनमें धर्म को प्रथम स्थान जबकि अर्थ को दूसरा स्थान मिला है। आचार्य चाणक्य ने "धर्मस्य मूलम् अर्थः" का समर्थन किया है। धर्म पूर्वक अर्थ का अर्जन व संचय ही हमारे लिए कल्याणकारी हो सकता है, इसलिए इस अर्थ का रक्षण, वर्धन तथा उपयोग भी क्रमशः होना चाहिए। वैदिक जीवन की नींव धर्म और अर्थ के संतुलन पर खड़ी थी। यहां एकर धन संचय का आदेश है तो दूसरी ओर जनहित में उसके वितरण पर भी जोर दिया गया है।

शतहस्त समाहार सहस्त्रहस्त सं किर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह।।

अथर्ववेद 3/24/5

अर्थात् 100 हाथ वाले होकर धन का संचय करो साथ ही, हजार हाथ वाले होकर उसका दान करो। लोकोपकार में वितरित करो। इसी प्रकार यजुर्वेद में मा गृधः कह कर धन से विरत रहने को कहा गया है। क्योंकि अंततः वह धन किसी का नहीं है।[1] कस्यस्वित् धनम।

वेदों में मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं अन्न, वस्त्र, निवास, शिक्षा, चिकित्सा आदि के लिए उपयुक्त तथा प्रचुर साधन जुटाने की बात कही गई है। यजुर्वेद में धृतपय, कीलाल आदि भक्ष्य पदार्थ, ब्रीहि, यव, माष, तिल, गोधूम आदि अनाज की, अथर्ववेद में अग्निशाला, देव सदन आदि तथा चिकित्सा क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न औषधियों तथा वनस्पतियों का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त 11/5 में शिक्षा एवं शिक्षक के आदर्शों पर प्रकाश डाला गया है।

वर्णाश्रम व्यवस्था वैदिक जीवन मीमांसा की प्रमुख विशेषता थी। समाज को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने में वैश्य वर्ग की महती भूमिका होती थी। वेश्यों के अतिरिक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं शूद्र भी विभिन्न प्रकार के कर्मों से अपनी-अपनी आजीविका चलाते थे। समाज में ब्राह्मण वर्ग का सर्वोच्च स्थान था। इसीलिए इस वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह राष्ट्र में बौद्धिक वातावरण तैयार कर लोगों की बौद्धिक उन्नति के लिए मार्गदर्शन करें।

क्षत्रिय वर्ग की जिम्मेदारी राष्ट्र रक्षा के साथ-साथ व्यापारी वर्ग की सुरक्षा एवं संरक्षण की भी थी। शूद्र वर्ग अपने शारीरिक श्रम के माध्यम से वैश्य वर्ग की सहायता करता था।

कृषि

वैदिक अर्थव्यवस्था में कृषि का प्रमुख स्थान था। यही आर्यों की आजीविका एवं समृद्धि का प्रमुख साधन थी। घरों की भांति खेत भी व्यक्तिगत संपत्ति होते थे। ऋग्वेद में एक स्थान पर अपाला अपने पिता अत्री के खेतों की समृद्ध उपज के लिए प्रार्थना करती हैं।[2] ऋग्वेद में छत्रपति और उर्वरापति शब्द भी खेतों के व्यक्तिगत स्वामियों के लिए प्रयुक्त हुए हैं।[3] गांव के चारों ओर चरागाह होते थे जिसके लिए ऋग्वेद में गव्य तथा गव्यूति शब्द प्रयुक्त हुए हैं। जिन पर संपूर्ण ग्राम का पशु वर्ग निर्बाध रूप से चरता था। अथर्ववेद का एक संपूर्ण सूक्त 3/17 कृषि को समर्पित है। इस सूक्त का देवता सीता (हल का फाल) है, जिसके प्रथम मंत्र में कहा गया है कि बुद्धिमान लोग (कवि) ही कृषि कर्म में संलग्न रहते हैं।

सीरा युंजन्ति कवयः वितन्वते पृथक् धीरा देवेषु सुम्नयौ।

अथर्ववेद 3/7/1

इसी प्रकार एक स्थान पर हल चलाने में समर्थ बैलों, कृषि कार्य में लगे कृषक तथा कृषि जनकल्याणकारी होने की कामना की गई है।

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लांगलम्।।

अर्थात् खेतों को जोतने, बोने, उत्तम रीति से सिंचाई करने तथा फसलों के उपजाने का विस्तृत उल्लेख इस सूक्त में मिलता है। वैदिक मान्यता के अनुसार मनुष्य के अर्थ उपार्जन हेतु कृषि कर्म ही सर्वोत्तम कर्म है। इसके विपरीत द्यूत क्रीड़ा अनार्योचित कर्म है जो मनुष्य को पतन की ओर अग्रसर करता है। ऋग्वेद के अक्ष सूक्त में एक जुआरी की आत्म ग्लानि तथा हृदय द्रावक पश्चाताप के वर्णन के पश्चात ऋषि कहता है।

अक्षैर्मादीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।

ऋग्वेद में कृष् धातु अनेक बार प्रयुक्त हुई है।[4] इससे कृषि कर्म की लोकप्रियता प्रकट होती है। हल-बेल से भूमि की जुताई करने के पश्चात उसमें बीज बोए जाते थे।[5] पके हुए अनाज को काटने के लिए हंसीया (दात्र अथवा स्रणी) का प्रयोग होता था। कटा हुआ अनाज अलग-अलग गट्ठों (वर्ष) [6] में बांधकर संग्रहालय (खल) में एकत्र किया जाता था।

पशुपालन

कृषि कर्म के साथ पशु पालन भी वैदिक सभ्यता का प्रमुख उद्यम था। ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर पशुधन की वृद्धि के लिए देवताओं से प्रार्थना की गई है। पशुपालन व्यवसाय में गाय का महत्वपूर्ण स्थान था। अथर्व वेद (3/14) में गोपालन की महिमा बताई गई है। इसी वेद के गौ महिमा सूक्त में गो दुग्ध सेवन का महत्व बताया गया है। गायों से वस्तुओं का लेन-देन भी किया जाता था। गाय दक्षिणा में भी दी जाती थी। ऋग्वेद में अवि (भेड) तथा अजा (बकरी) के उल्लेख से इनकी उपयोगिता, दूध एवं चमड़े तथा ऊन के रूप मे देखी जा सकती है।[7] एक स्थान पर पूषन् देवता भेड़ के ऊन का वस्त्र धारण किए प्रदर्शित किया गया है।[8] घोड़े का उपयोग युद्ध अश्वारोही, घुड़दौड़, घुड़सवारी और गाड़ी आदि खींचने में किया जाता था।

व्यापार

ऋग्वेद में उल्लिखित अयस् धातु का प्रयोग कवच शिरस्त्राण, बाण तथा अन्य अस्त्र शस्त्र निर्माण में किया जाता था। इसके अतिरिक्त सुवर्ण, रजत ताम्र आदि धातुओं के प्रयोग, उत्पादन एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर व्यापार होने का उल्लेख भी मिलता है।

ऋग्वेद के वरुण सूक्त में समुद्र में चलने वाली नौकाओं के वर्णन से स्पष्ट होता है कि उस समय आवागमन एवं व्यापार के लिए नौकाओं का प्रयोग किया जाता था।

वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पततां वेद नावः समुद्रियः।

ऋग्वेद 1/25/7

वेदों में सड़कों राजमार्गों तथा सार्थवाहों (कारवां) को सुरक्षित रखने की बात भी कही गई है।

ये ते पन्थानो बहवो जनाय ना रथस्य वत्मानश्च यातवे।
यैसंचरन्त्युभ्येभद्रपापास्तं पन्थानं जयेमानमित्रमस्तकरं यंछिवं तेन नो मृड।

अथर्ववेद 12/1/47

अध्ययन का उद्देश्य

भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अध्ययेताओं की भी इच्छा होती है कि वे वेदों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें। इसी उद्देश्य से वेद कालीन अर्थव्यवस्था को आधार बनाकर वेद कालीन आजीविका के संसाधन लेख लिखा गया है। इस आलेख में विभिन्न वेद मंत्रों के उदाहरणों के माध्यम से तत्कालीन आजीविका के संसाधनों एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहां जा सकता है कि संपूर्ण समाज की आर्थिक उन्नति एवं समृद्धि के लिए सभी वर्गों को अपने अपने कर्तव्य अच्छी प्रकार से करने की सलाह वैदिक ग्रंथों में दी गई है।

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वान्।

अथर्ववेद 2/2/22

इस प्रकार स्पष्ट है कि वैदिक युग में समाज के चारों वर्गों के कर्म निर्धारित थे, जिन्हें करते हुए सभी लोग संतुष्ट एवं संपन्न थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संस्कृत साहित्य का इतिहास- डॉ. कला नाथ शास्त्री*
2. *ऋग्वेद 8/91/5-6*
3. *ऋग्वेद 10/19/3-4*
4. *ऋग्वेद 1/100/10*
5. *ऋग्वेद 10/103/3-4*
6. *ऋग्वेद 10/131/2*
7. *ऋग्वेद 10/48/7*
8. *ऋग्वेद 10/26/13*
9. *संस्कृत महाकाव्य परम्परा- डॉ. केशवराव मुसलगावकर*
10. *वेदों में आयुर्वेद - डॉ. कपिल देव द्विवेदी*
11. *वेदों में राजनीतिशास्त्र - डॉ. कपिल देव द्विवेदी*
12. *वेदों में विज्ञान - डॉ. कपिल देव द्विवेदी*
13. *वेदों में विज्ञान - डॉ. कपिल देव द्विवेदी*
14. *वैदिक कोश - पं0 भगवद्दत्त एवं हंसराज*
15. *स्मृतियों में नारी - डॉ. भारती आर्य*
16. *भारतीय दर्शन - डॉ. जगदीश चन्द्र मिश्र*
17. *संस्कृत हिन्दी कोश - वामन शिवराम आप्टे*
18. *संस्कृत निबन्ध शतकम् - डॉ. कपिल देव द्विवेदी*